खुली अर्थव्यवस्था – समष्टि अर्थशास्त्र

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» खुली अर्थव्यवस्था का परिचय

प्रश्न 1 (आसान). क्या एक बंद अर्थव्यवस्था दूसरे देशों से वित्तीय परिसंपत्तियां खरीद सकती है?
उत्तर – नहीं, एक बंद अर्थव्यवस्था दूसरे देशों से कोई जुड़ाव नहीं रखती।

प्रश्न 2 (आसान). खुली अर्थव्यवस्था में वस्तुओं के व्यापार को क्या कहते हैं?
उत्तर – आयात और निर्यात।

प्रश्न 3 (मध्यम). अगर कोई भारतीय कंपनी लंदन स्टॉक एक्सचेंज में शेयर खरीदती है, तो यह खुली अर्थव्यवस्था के किस प्रकार के जुड़ाव का उदाहरण है?
उत्तर – यह 'वित्तीय बाजार' (Financial Market) के जुड़ाव का उदाहरण है क्योंकि यह वित्तीय परिसंपत्तियों का व्यापार है।

प्रश्न 4 (कठिन). खुली अर्थव्यवस्था, बंद अर्थव्यवस्था की तुलना में उपभोक्ताओं को कैसे लाभ पहुंचाती है?
उत्तर – खुली अर्थव्यवस्था में उपभोक्ताओं को 'more choices' मिलते हैं क्योंकि वे घरेलू और विदेशी दोनों तरह की वस्तुओं और सेवाओं में से चुन सकते हैं, जिससे उन्हें बेहतर गुणवत्ता और कम दाम पर चीजें मिल सकती हैं।

» अदायगी-संतुलन (BoP) और उसके खाते

प्रश्न 5 (आसान). अदायगी-संतुलन (BoP) कितने समय के लिए बनाया जाता है?
उत्तर – एक निश्चित समयावधि के लिए, आमतौर पर एक वर्ष या दो वर्ष।

प्रश्न 6 (आसान). BoP के दो मुख्य खाते कौन से हैं?
उत्तर – चालू खाता और पूंजी खाता।

प्रश्न 7 (मध्यम). अगर कोई भारतीय कंपनी विदेश में ज़मीन खरीदती है, तो यह BoP के किस खाते में दर्ज होगा?
उत्तर – यह पूंजी खाते में दर्ज होगा क्योंकि यह एक परिसंपत्ति (asset) का लेन-देन है।

प्रश्न 8 (कठिन). पर्यटन से होने वाली आय BoP के किस खाते का हिस्सा है और क्यों?
उत्तर – पर्यटन से होने वाली आय BoP के चालू खाते का हिस्सा है क्योंकि यह सेवाओं के निर्यात की तरह है, जहां विदेशी लोग भारत में आकर सेवाओं (जैसे होटल, ट्रैवल) का उपभोग करते हैं।

» चालू खाता: घटक और संतुलन

प्रश्न 9 (आसान). निम्नलिखित में से कौन 'चालू खाते' का घटक है: A) विदेशी निवेश B) वस्तुओं का निर्यात C) विदेशी ऋण?
उत्तर – B) वस्तुओं का निर्यात

प्रश्न 10 (आसान). अगर देश को प्राप्तियाँ भुगतानों से ज़्यादा हों, तो चालू खाते पर क्या होगा?
उत्तर – चालू खाते का अधिशेष (Surplus)

प्रश्न 11 (मध्यम). यदि किसी देश का सेवाओं का निर्यात 300 करोड़ और सेवाओं का आयात 400 करोड़ है, तो अदृश्य मदों का संतुलन क्या होगा?
उत्तर – 100 करोड़ का घाटा

प्रश्न 12 (कठिन). एक देश का वस्तुओं का व्यापार घाटा 50 करोड़ है. सेवाओं का अधिशेष 80 करोड़ है, और निवल अंतरण प्राप्तियाँ 30 करोड़ हैं. इस देश के चालू खाते का कुल संतुलन क्या होगा?
उत्तर – चालू खाते का अधिशेष 60 करोड़ (80 + 30 - 50 = 60)

» पूँजी खाता: घटक और संतुलन

प्रश्न 13 (आसान). अगर कोई विदेशी कंपनी भारत में फैक्ट्री लगाती है, तो यह पूँजी खाते के किस घटक में आएगा?
उत्तर – प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)

प्रश्न 14 (आसान). यदि पूँजी अंतर्प्रवाह (inflow) पूँजी बहिर्प्रवाह (outflow) से ज़्यादा हो, तो पूँजी खाता क्या कहलाएगा?
उत्तर – अधिशेष (Surplus)

प्रश्न 15 (मध्यम). बताओ, अगर भारत को विदेशों से ₹800 करोड़ का कर्ज़ मिलता है, और भारतीय कंपनियाँ विदेशों में ₹600 करोड़ के शेयर खरीदती हैं, तो पूँजी खाते पर क्या असर होगा?
उत्तर – ₹200 करोड़ का अधिशेष (Surplus)

प्रश्न 16 (कठिन). एक देश का चालू खाता घाटा ₹1200 करोड़ है। उसे अपने अदायगी संतुलन (BoP) को संतुलित करने के लिए पूँजी खाते में कितना अधिशेष चाहिए होगा, यह मानते हुए कि कोई आधिकारिक कोष लेन-देन नहीं है?
उत्तर – चालू खाता घाटे को पूरा करने के लिए '₹1200 करोड़ का पूँजी खाता अधिशेष' (Capital Account Surplus of ₹1200 Crore) चाहिए होगा, क्योंकि BoP संतुलन के लिए चालू खाता + पूँजी खाता = 0 होना चाहिए।

» अदायगी-संतुलन घाटा, अधिशेष और स्वायत्त/समायोजित लेनदेन

प्रश्न 17 (आसान). यदि किसी देश का चालू खाता अधिशेष 100 करोड़ रुपये है और पूंजी खाता घाटा 100 करोड़ रुपये है, तो अदायगी-संतुलन (BOP) क्या होगा?
उत्तर – BOP संतुलित होगा (0 रुपये)।

प्रश्न 18 (आसान). लाभ कमाने के उद्देश्य से किया गया विदेशी निवेश किस प्रकार का लेनदेन है - स्वायत्त या समायोजित?
उत्तर – स्वायत्त लेनदेन।

प्रश्न 19 (मध्यम). अगर RBI देश के विदेशी मुद्रा भंडार को बेचकर विनिमय दर को स्थिर करने की कोशिश करता है, तो यह किस प्रकार का लेनदेन है और क्यों?
उत्तर – यह एक समायोजित लेनदेन है, क्योंकि यह अदायगी-संतुलन में 'विषमता को पाटने के लिए' किया जा रहा है।

प्रश्न 20 (कठिन). एक देश का चालू खाता घाटा 800 मिलियन डॉलर है। पूंजी खाते में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) के माध्यम से 500 मिलियन डॉलर प्राप्त हुए हैं और विदेशी ऋण के माध्यम से 200 मिलियन डॉलर प्राप्त हुए हैं। अदायगी-संतुलन घाटा या अधिशेष की गणना करें और बताएं कि शेष अंतर को कैसे वित्तपोषित किया जाएगा?
उत्तर – चालू खाता घाटा = -800 मिलियन डॉलर। पूंजी खाते से कुल प्राप्तियाँ = 500 (FDI) + 200 (ऋण) = 700 मिलियन डॉलर। कुल संतुलन = -800 + 700 = -100 मिलियन डॉलर। यह '100 मिलियन डॉलर का अदायगी-संतुलन घाटा' है। इस घाटे को पूरा करने के लिए केंद्रीय बैंक अपने 'विदेशी विनिमय कोषों' (Foreign Exchange Reserves) का उपयोग करेगा या अतिरिक्त 'ऋण' लेगा।

» विदेशी विनिमय बाजार और विनिमय दर

प्रश्न 21 (आसान). अगर 1 डॉलर = ₹82 है, तो 10 डॉलर खरीदने के लिए कितने रुपये चाहिए?
उत्तर – ₹820

प्रश्न 22 (आसान). विदेशी विनिमय बाजार क्या है?
उत्तर – वह बाजार जहाँ राष्ट्रीय मुद्राओं का आपस में व्यापार होता है।

प्रश्न 23 (मध्यम). एक अमेरिकी पर्यटक भारत आता है और उसके पास 200 डॉलर हैं। यदि 1 डॉलर = ₹83 है, तो उसे कितने रुपये मिलेंगे?
उत्तर – ₹16,600

प्रश्न 24 (कठिन). यदि भारतीय रुपया डॉलर के मुकाबले मजबूत होता है (यानी 1 डॉलर अब ₹83 के बजाय ₹80 का हो जाता है), तो भारतीय आयातकों (importers) पर इसका क्या असर होगा?
उत्तर – आयातकों के लिए विदेशी सामान सस्ता हो जाएगा, क्योंकि अब उन्हें 1 डॉलर खरीदने के लिए कम रुपये देने होंगे।

» विदेशी विनिमय की मांग और पूर्ति

प्रश्न 25 (आसान). विदेशी विनिमय की मांग क्यों पैदा होती है? कोई एक कारण बताएं।
उत्तर – आयात करने के लिए (दूसरे देशों से वस्तुएं और सेवाएं खरीदने के लिए)।

प्रश्न 26 (आसान). जब भारत से कोई वस्तु विदेश निर्यात की जाती है, तो इससे विदेशी विनिमय की मांग बढ़ती है या पूर्ति?
उत्तर – इससे विदेशी विनिमय की पूर्ति बढ़ती है।

प्रश्न 27 (मध्यम). यदि 1 डॉलर = 70 रुपये से बदलकर 1 डॉलर = 65 रुपये हो जाए, तो भारत में आयातों की मांग पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
उत्तर – यह विनिमय दर में कमी है (रुपये मज़बूत हुआ)। अब आयातित वस्तुएं सस्ती हो जाएंगी, जिससे आयातों की मांग बढ़ेगी।

प्रश्न 28 (कठिन). जब विदेशी निवेशक भारत में पैसा लगाते हैं (निवेश करते हैं), तो इससे विदेशी विनिमय की मांग और पूर्ति में से क्या प्रभावित होता है और कैसे?
उत्तर – जब विदेशी निवेशक भारत में निवेश करते हैं, तो वे अपने देश की मुद्रा (जैसे डॉलर) को भारत लेकर आते हैं और उसे रुपये में बदलते हैं। इससे भारतीय बाजार में विदेशी विनिमय (डॉलर) की पूर्ति बढ़ती है।

» तिरती विनिमय दर का निर्धारण

प्रश्न 29 (आसान). अगर भारतीय कंपनियों का निर्यात बढ़ जाए तो डॉलर-रुपये की विनिमय दर पर क्या असर होगा?
उत्तर – भारत को ज़्यादा डॉलर मिलेंगे (पूर्ति बढ़ेगी), जिससे डॉलर सस्ता होगा और रुपये का मूल्य बढ़ेगा।

प्रश्न 30 (आसान). तिरती विनिमय दर प्रणाली में विनिमय दर कौन तय करता है?
उत्तर – बाज़ार की माँग और पूर्ति की शक्तियाँ।

प्रश्न 31 (मध्यम). एक उदाहरण देकर समझाओ कि रुपये का 'मूल्यह्रास' कैसे होता है जब तिरती विनिमय दर प्रणाली लागू होती है।
उत्तर – जब भारतीय ज़्यादा विदेशी सामान खरीदते हैं तो विदेशी मुद्रा (जैसे डॉलर) की माँग बढ़ जाती है। 'जैसे चित्र 6.2 में दिखाया गया है, मांग वक्र मूल मांग वक्र के सीधी ओर ऊपर की तरफ शिफ्ट कर जाता है।' इससे डॉलर महंगा हो जाता है (जैसे पहले 1 डॉलर = 50 रुपये था, अब 1 डॉलर = 70 रुपये हो जाए), और रुपये का मूल्य गिर जाता है, जिसे 'मूल्यह्रास' कहते हैं। 'इससे यह इंगित होता है कि डॉलर के संदर्भ में रुपये का मूल्य गिर गया है।'।

प्रश्न 32 (कठिन). मान लीजिए कि भारत में ब्याज दरें दुनिया के बाकी देशों के मुकाबले बहुत बढ़ जाती हैं। तिरती विनिमय दर के अंतर्गत इसका भारतीय रुपये पर क्या प्रभाव पड़ेगा और क्यों?
उत्तर – जब भारत में ब्याज दरें बढ़ेंगी तो विदेशी निवेशक भारत में ज़्यादा निवेश करने आएंगे क्योंकि उन्हें यहाँ बेहतर रिटर्न मिलेगा। इसके लिए उन्हें अपने डॉलर या अन्य मुद्रा को रुपये में बदलना पड़ेगा। इससे रुपये की 'माँग' बढ़ेगी। 'अतः किसी देश की आंतरिक ब्याज दर में वृद्धि से घरेलू मुद्रा के मूल्य में वृद्धि होगी।' जब रुपये की माँग बढ़ेगी, तो रुपये का 'मूल्यवृद्धि' (appreciation) होगा, यानी रुपया डॉलर के मुकाबले मज़बूत होगा। 'इसका अर्थ यह है कि देश A की करेंसी का मांग वक्र बायीं ओर तथा पूर्ति वक्र दायीं ओर शिफ्ट होगा। इससे देश A की मुद्रा के मूल्य में ह्रास तथा देश B की मुद्रा के मूल्य में वृद्धि होगी।' (यह A और B देशों के संदर्भ में है, हमारे केस में, B भारत होगा, तो भारत की मुद्रा में वृद्धि होगी)।

» ब्याज दरें, आय और दीर्घकाल में विनिमय दर पर प्रभाव

प्रश्न 33 (आसान). अगर देश X में ब्याज दरें बढ़ती हैं, तो उसकी मुद्रा का मूल्य बढ़ेगा या घटेगा?
उत्तर – बढ़ेगा

प्रश्न 34 (आसान). जब किसी देश की आय बढ़ती है और वो ज़्यादा आयात करता है, तो उसकी घरेलू मुद्रा का क्या होता है?
उत्तर – मूल्यह्रास होता है (घटता है)

प्रश्न 35 (मध्यम). क्रय-शक्ति समता सिद्धांत के अनुसार, यदि भारत में मुद्रास्फीति अमेरिका से अधिक है, तो डॉलर के मुकाबले रुपये का क्या होगा?
उत्तर – रुपये का मूल्यह्रास होगा।

प्रश्न 36 (कठिन). देश A में एक नोटबुक 50 रुपये की है और देश B में 1 डॉलर की। यदि देश A में मुद्रास्फीति 10% और देश B में 5% होती है, तो नई PPP विनिमय दर क्या होगी?
उत्तर – पुरानी दर 50 रुपये/डॉलर। देश A में नई कीमत 55 रुपये। देश B में नई कीमत 1.05 डॉलर। नई दर 55/1.05 52.38 रुपये/डॉलर।

» स्थिर विनिमय दरें और अवमूल्यन/पुर्नमूल्यन

प्रश्न 37 (आसान). स्थिर विनिमय दर प्रणाली में विनिमय दर कौन निर्धारित करता है?
उत्तर – सरकार

प्रश्न 38 (आसान). जब सरकार अपनी मुद्रा का मूल्य घटाती है, तो उसे क्या कहते हैं?
उत्तर – अवमूल्यन

प्रश्न 39 (मध्यम). यदि 1 डॉलर = 80 रुपये की विनिमय दर से 1 डॉलर = 70 रुपये हो जाती है, तो यह अवमूल्यन है या पुर्नमूल्यन?
उत्तर – यह पुर्नमूल्यन है, क्योंकि रुपये का मूल्य डॉलर के मुकाबले बढ़ा है।

प्रश्न 40 (कठिन). सरकार अवमूल्यन का प्रयोग मुख्य रूप से किस आर्थिक उद्देश्य के लिए करती है?
उत्तर – सरकार अवमूल्यन का प्रयोग मुख्य रूप से निर्यात बढ़ाने के लिए करती है, क्योंकि इससे घरेलू वस्तुएं विदेशी खरीदारों के लिए सस्ती हो जाती हैं।

» तिरती और स्थिर विनिमय दर प्रणालियों के गुण और दोष

प्रश्न 41 (आसान). किस विनिमय दर प्रणाली में सरकार को विदेशी मुद्रा भंडार रखने पड़ते हैं?
उत्तर – स्थिर विनिमय दर प्रणाली में।

प्रश्न 42 (आसान). किस प्रणाली में बाज़ार की शक्तियां विनिमय दर तय करती हैं?
उत्तर – तिरती विनिमय दर प्रणाली में।

प्रश्न 43 (मध्यम). स्थिर विनिमय दर प्रणाली का सबसे बड़ा लाभ क्या है?
उत्तर – विश्वसनीयता और अनुमानित जोखिम कम होना।

प्रश्न 44 (कठिन). तिरती विनिमय दर प्रणाली में मौद्रिक नीति की स्वतंत्रता क्यों अधिक होती है?
उत्तर – क्योंकि केंद्रीय बैंक को विनिमय दर को स्थिर बनाए रखने के लिए हस्तक्षेप नहीं करना पड़ता, और वह घरेलू आर्थिक लक्ष्यों पर केंद्रित रह सकता है।

» प्रबंधित तिरती विनिमय दर प्रणाली

प्रश्न 45 (आसान). प्रबंधित तिरती विनिमय दर प्रणाली में विनिमय दर का निर्धारण मुख्यतः किसके द्वारा होता है?
उत्तर – बाजार की शक्तियों (मांग और आपूर्ति) द्वारा।

प्रश्न 46 (आसान). इस प्रणाली में केंद्रीय बैंक का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?
उत्तर – विनिमय दर के अत्यधिक उतार-चढ़ाव को रोकना।

प्रश्न 47 (मध्यम). यदि भारतीय रुपया बहुत तेज़ी से मज़बूत हो रहा है (डॉलर की तुलना में उसका मूल्य बढ़ रहा है), तो भारतीय रिज़र्व बैंक क्या कार्रवाई कर सकता है?
उत्तर – भारतीय रिज़र्व बैंक बाज़ार में अमेरिकी डॉलर खरीदकर रुपये को बहुत ज़्यादा मज़बूत होने से रोक सकता है।

प्रश्न 48 (कठिन). प्रबंधित तिरती विनिमय दर प्रणाली, स्थिर और तिरती प्रणाली दोनों के फायदे कैसे प्रदान करती है?
उत्तर – यह तिरती प्रणाली से बाजार-निर्धारित दर का लचीलापन लेती है और स्थिर प्रणाली से केंद्रीय बैंक के हस्तक्षेप द्वारा स्थिरता बनाए रखती है, जिससे अत्यधिक अस्थिरता से बचा जा सकता है।

» खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण

प्रश्न 49 (आसान). यदि एक खुली अर्थव्यवस्था में C=200, I=50, G=30, X=40 और M=20 हो, तो राष्ट्रीय आय (Y) क्या होगी?
उत्तर – Y = 200 + 50 + 30 + 40 - 20 = 300

प्रश्न 50 (आसान). राष्ट्रीय आय के सूत्र Y = C + I + G + X - M में, 'X' किसे दर्शाता है?
उत्तर – X निर्यात (Exports) को दर्शाता है।

प्रश्न 51 (मध्यम). एक खुली अर्थव्यवस्था में, यदि 'सीमांत उपभोग प्रवृत्ति' (Marginal Propensity to Consume) (c) = 0.8 और 'सीमांत आयात प्रवृत्ति' (Marginal Propensity to Import) (m) = 0.2 है, तो 'आय गुणक' (Income Multiplier) क्या होगा?
उत्तर – आय गुणक = 1 / (1 - c + m) = 1 / (1 - 0.8 + 0.2) = 1 / (0.2 + 0.2) = 1 / 0.4 = 2.5

प्रश्न 52 (कठिन). एक खुली अर्थव्यवस्था में, यदि उपभोग फलन C = 10 + 0.9Y है, निवेश I = 20 है, सरकारी व्यय G = 15 है, निर्यात X = 10 है और आयात M = 5 + 0.1Y है। संतुलित राष्ट्रीय आय (Equilibrium National Income) ज्ञात कीजिए।
उत्तर – Y = C + I + G + X - M => Y = (10 + 0.9Y) + 20 + 15 + 10 - (5 + 0.1Y) => Y = 10 + 20 + 15 + 10 - 5 + 0.9Y - 0.1Y => Y = 50 + 0.8Y => Y - 0.8Y = 50 => 0.2Y = 50 => Y = 50 / 0.2 = 250

» खुली अर्थव्यवस्था गुणक

प्रश्न 53 (आसान). यदि MPC 0.8 और MPM 0.1 है, तो खुली अर्थव्यवस्था गुणक क्या होगा?
उत्तर – 2.5

प्रश्न 54 (आसान). क्या खुली अर्थव्यवस्था गुणक बंद अर्थव्यवस्था गुणक से बड़ा हो सकता है?
उत्तर – नहीं

प्रश्न 55 (मध्यम). यदि MPC 0.6 और MPM 0.4 है, और स्वायत्त निवेश में 200 करोड़ की वृद्धि होती है, तो कुल आय में कितनी वृद्धि होगी?
उत्तर – 400 करोड़ (गुणक = 1 / (1 - 0.6 + 0.4) = 1 / 0.8 = 1.25; आय वृद्धि = 1.25 * 200 = 250 करोड़)

प्रश्न 56 (कठिन). एक अर्थव्यवस्था में बंद अर्थव्यवस्था गुणक 4 है। यदि इस अर्थव्यवस्था को खोला जाता है और सीमांत आयात प्रवृत्ति 0.10 हो जाती है, तो नया खुली अर्थव्यवस्था गुणक क्या होगा? (मान लें MPC वही रहता है)
उत्तर – 2.5 (बंद अर्थव्यवस्था गुणक 4 होने का मतलब है 1/(1-c) = 4, तो 1-c = 0.25, जिससे c = 0.75। अब खुली अर्थव्यवस्था गुणक = 1 / (1 - 0.75 + 0.10) = 1 / 0.35 2.857)

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. अगर भारत अमेरिका से कपड़े आयात करता है और अमेरिका को सॉफ़्टवेयर निर्यात करता है, तो यह खुली अर्थव्यवस्था के किस जुड़ाव को दर्शाता है?

› पहला वाक्य कहता है 'भारत अमेरिका से कपड़े आयात करता है' – यह वस्तुओं का आदान-प्रदान है।

› दूसरा वाक्य कहता है 'अमेरिका को सॉफ़्टवेयर निर्यात करता है' – यह सेवाओं का आदान-प्रदान है।

› वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार 'निर्गत बाजार' (Output Market) के अंतर्गत आता है।

› तो यह दर्शाता है कि भारत एक खुली अर्थव्यवस्था है और 'निर्गत बाजार' के माध्यम से जुड़ रहा है।

उत्तर – यह 'खुली अर्थव्यवस्था' के 'निर्गत बाजार' (Output Market) जुड़ाव को दर्शाता है।

उदाहरण 2. अगर भारत ने एक साल में 500 करोड़ डॉलर का सामान निर्यात किया, 300 करोड़ डॉलर का आयात किया, और 100 करोड़ डॉलर की विदेशी पूंजी निवेश के रूप में देश में आई, तो BoP की कौन सी अवधारणाएं यहाँ दिख रही हैं?

› पहला कदम: '500 करोड़ डॉलर का सामान निर्यात' और '300 करोड़ डॉलर का आयात' – ये दोनों ही वस्तुओं के व्यापार से जुड़े हैं और चालू खाते का हिस्सा बनेंगे।

› दूसरा कदम: '100 करोड़ डॉलर की विदेशी पूंजी निवेश के रूप में देश में आई' – यह वित्तीय संपत्ति का लेन-देन है और पूंजी खाते का हिस्सा बनेगा।

› तीसरा कदम: यह पूरा लेन-देन, जिसमें व्यापार और निवेश दोनों शामिल हैं, अदायगी-संतुलन (BoP) के सिद्धांत को दर्शाता है।

उत्तर – यहाँ BoP के चालू खाते (वस्तुओं का व्यापार) और पूंजी खाते (विदेशी निवेश) दोनों के उदाहरण दिख रहे हैं।

उदाहरण 3. एक देश के चालू खाते की जानकारी नीचे दी गई है. चालू खाते का संतुलन ज्ञात कीजिए और बताइए कि यह अधिशेष है या घाटा?

› वस्तुओं का निर्यात: 500 करोड़ रुपये

› वस्तुओं का आयात: 600 करोड़ रुपये

› सेवाओं का निर्यात: 200 करोड़ रुपये

› सेवाओं का आयात: 150 करोड़ रुपये

› विदेशों से प्राप्त अंतरण: 100 करोड़ रुपये

› विदेशों को दिए गए अंतरण: 50 करोड़ रुपये

› सबसे पहले, सभी प्राप्तियों (inflows) को जोड़ें: वस्तुओं का निर्यात + सेवाओं का निर्यात + विदेशों से प्राप्त अंतरण = 500 + 200 + 100 = 800 करोड़ रुपये.

› अब, सभी भुगतानों (outflows) को जोड़ें: वस्तुओं का आयात + सेवाओं का आयात + विदेशों को दिए गए अंतरण = 600 + 150 + 50 = 800 करोड़ रुपये.

› चालू खाते का संतुलन निकालने के लिए, कुल प्राप्तियों में से कुल भुगतानों को घटाएँ: 800 - 800 = 0 करोड़ रुपये.

उत्तर – चालू खाते का संतुलन = 0 करोड़ रुपये. यह एक संतुलित चालू खाता है, न घाटा है और न ही अधिशेष है.

उदाहरण 4. एक देश में, विदेशों से ₹500 करोड़ का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) आया, ₹200 करोड़ का पोर्टफोलियो निवेश आया और ₹300 करोड़ का विदेशी ऋण प्राप्त हुआ। उसी साल, देश के नागरिकों ने विदेशों में ₹400 करोड़ के शेयर खरीदे और ₹100 करोड़ का विदेशी ऋण चुकाया। इस देश का पूँजी खाता संतुलन ज्ञात करें।

› सबसे पहले, हम 'पूँजी अंतर्प्रवाह' (Capital Inflows) को जोड़ेंगे – वो पैसा जो देश के अंदर आया।

› इसमें 'Direct Foreign Investment' यानी ₹500 करोड़ + 'Portfolio Investment' यानी ₹200 करोड़ + 'External Borrowings' यानी ₹300 करोड़ शामिल हैं। तो कुल 'पूँजी अंतर्प्रवाह' हुआ 500 + 200 + 300 = ₹1000 करोड़।

› अब, 'पूँजी बहिर्प्रवाह' (Capital Outflows) को जोड़ेंगे – वो पैसा जो देश से बाहर गया।

› इसमें 'Purchase of foreign shares' यानी ₹400 करोड़ + 'Repayment of foreign loans' यानी ₹100 करोड़ शामिल हैं। तो कुल 'पूँजी बहिर्प्रवाह' हुआ 400 + 100 = ₹500 करोड़।

› अंत में, 'पूँजी खाता संतुलन' निकालने के लिए, 'पूँजी अंतर्प्रवाह' में से 'पूँजी बहिर्प्रवाह' को घटाएँगे।

उत्तर – ₹1000 करोड़ (अंतर्प्रवाह) - ₹500 करोड़ (बहिर्प्रवाह) = ₹500 करोड़ का पूँजी खाता 'अधिशेष' (Capital Account Surplus)।

उदाहरण 5. मान लीजिए एक देश का चालू खाता घाटा 500 करोड़ रुपये है और उसके पूंजी खाते में 300 करोड़ रुपये का अधिशेष है। 'अदायगी-संतुलन घाटा' या 'अधिशेष' क्या होगा?

› हमें यह पता लगाना है कि देश का कुल अदायगी-संतुलन कैसा है।

› सूत्र है: चालू खाता + पूंजी खाता = कुल संतुलन।

› दिए गए आंकड़े हैं: चालू खाता घाटा = -500 करोड़ रुपये (घाटा इसलिए माइनस में लेते हैं)।

› पूंजी खाता अधिशेष = +300 करोड़ रुपये (अधिशेष इसलिए प्लस में लेते हैं)।

› अब इन्हें जोड़ें: -500 करोड़ + 300 करोड़ = -200 करोड़ रुपये।

उत्तर – कुल संतुलन -200 करोड़ रुपये है, जिसका अर्थ है कि देश का अदायगी-संतुलन घाटा 200 करोड़ रुपये है। इसे पूरा करने के लिए केंद्रीय बैंक को अपने विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग करना होगा।

उदाहरण 6. मान लीजिए एक भारतीय कंपनी को जर्मनी से 500 यूरो का सामान खरीदना है। यदि 1 यूरो की विनिमय दर ₹90 है, तो कंपनी को कितने रुपये देने होंगे?

› पहले यह देखो कि हमें कितना सामान खरीदना है – 500 यूरो का।

› फिर यह देखो कि 1 यूरो की कीमत रुपयों में कितनी है – ₹90।

› अब कुल रुपये निकालने के लिए, यूरो की संख्या को 1 यूरो की कीमत से गुणा कर दो।

› तो, 500 यूरो × ₹90/यूरो = ₹45,000

उत्तर – कंपनी को 500 यूरो के सामान के लिए ₹45,000 देने होंगे।

उदाहरण 7. मान लीजिए कि अमेरिका में एक खिलौने की कीमत 5 डॉलर है। यदि विनिमय दर 1 डॉलर = 60 रुपये है, तो भारतीय खरीदार को यह खिलौना कितने रुपये में पड़ेगा? और यदि विनिमय दर बढ़कर 1 डॉलर = 75 रुपये हो जाए, तो क्या होगा?

› पहला केस: विनिमय दर 1 डॉलर = 60 रुपये है।

› भारतीय खरीदार को खिलौने की कीमत = 5 डॉलर * 60 रुपये/डॉलर = 300 रुपये।

› दूसरा केस: विनिमय दर बढ़कर 1 डॉलर = 75 रुपये हो जाए।

› भारतीय खरीदार को खिलौने की कीमत = 5 डॉलर * 75 रुपये/डॉलर = 375 रुपये।

› निष्कर्ष: विनिमय दर बढ़ने पर, भारतीय खरीदार के लिए आयातित वस्तु महंगी हो गई (₹300 से ₹375), जिससे खिलौने की मांग और डॉलर की मांग कम हो सकती है।

उत्तर – पहले केस में ₹300, दूसरे केस में ₹375। विनिमय दर बढ़ने पर आयातित वस्तु महंगी हो जाती है, जिससे मांग कम हो सकती है।

उदाहरण 8. मान लीजिए कि भारत में चीनी मोबाइल फोन की बहुत मांग बढ़ जाती है, जिससे भारतीय व्यापारियों को चीन को भुगतान करने के लिए ज़्यादा 'चीनी युआन' की ज़रूरत पड़ती है। ऐसी स्थिति में रुपये और युआन की विनिमय दर पर क्या प्रभाव पड़ेगा और क्यों?

› पहला कदम: पहचानो कि यहाँ क्या हो रहा है। भारतीय 'चीनी युआन' की माँग कर रहे हैं क्योंकि उन्हें चीन से सामान खरीदना है।

› दूसरा कदम: अब सोचो, जब किसी चीज़ की माँग बढ़ती है, तो उसकी कीमत का क्या होता है? युआन की माँग बढ़ गई है।

› तीसरा कदम: जब युआन की माँग बढ़ी, तो 'युआन' महंगा हो जाएगा। इसका मतलब है, हमें अब एक युआन खरीदने के लिए पहले से ज़्यादा रुपये देने पड़ेंगे। किताब में लिखा है, 'विनिमय दर में वृद्धि का तात्पर्य है कि विदेशी मुद्रा डॉलर की कीमत, घरेलू मुद्रा (रुपयों) के रूप में बढ़ गई है।'

› चौथा कदम: इस स्थिति में, 'रुपये का मूल्यह्रास' (depreciation) होगा, क्योंकि युआन की तुलना में रुपये की कीमत गिर गई है।

› पांचवा कदम: इसका सीधा सा मतलब है कि अब हमें एक युआन के लिए ज़्यादा रुपये चुकाने होंगे।

उत्तर – चीनी मोबाइल फोन की बढ़ती माँग से चीनी युआन की माँग बढ़ेगी। इससे युआन महंगा हो जाएगा और रुपये का मूल्यह्रास होगा। यानी, एक युआन खरीदने के लिए अब हमें पहले से ज़्यादा रुपये देने होंगे।

उदाहरण 9. मान लीजिये अमेरिका में एक टी-शर्ट की कीमत 10 डॉलर है और भारत में उसी टी-शर्ट की कीमत 800 रुपये है। यदि भारत में 20% और अमेरिका में 10% मुद्रास्फीति होती है, तो क्रय-शक्ति समता सिद्धांत के अनुसार नई विनिमय दर क्या होगी?

› सबसे पहले, पुरानी विनिमय दर निकालें: 800 रुपये / 10 डॉलर = 80 रुपये प्रति डॉलर।

› अब, भारत में टी-शर्ट की नई कीमत निकालें: 800 रुपये + (800 * 0.20) = 800 + 160 = 960 रुपये।

› अमेरिका में टी-शर्ट की नई कीमत निकालें: 10 डॉलर + (10 * 0.10) = 10 + 1 = 11 डॉलर।

› नई क्रय-शक्ति समता विनिमय दर निकालें: 960 रुपये / 11 डॉलर = लगभग 87.27 रुपये प्रति डॉलर।

उत्तर – नई विनिमय दर लगभग 87.27 रुपये प्रति डॉलर होगी।

उदाहरण 10. मान लीजिए किसी देश की सरकार स्थिर विनिमय दर प्रणाली अपनाती है, जहाँ 1 डॉलर = 65 रुपये तय किया गया है। यदि बाज़ार में 1 डॉलर की माँग बढ़कर 70 रुपये हो जाती है, तो सरकार क्या कार्रवाई करेगी ताकि दर 65 रुपये पर स्थिर रहे? यदि सरकार बाद में निर्यात बढ़ाने के लिए रुपये का अवमूल्यन करती है और नई दर 1 डॉलर = 75 रुपये तय करती है, तो यह कैसे प्रभावित करेगा?

› पहला कदम: सरकार ने 1 डॉलर = 65 रुपये की दर तय की है।

› दूसरा कदम: जब बाज़ार में डॉलर की माँग बढ़कर 70 रुपये हो जाती है (यानी डॉलर महंगा हो रहा है), तो इसका मतलब है कि 65 रुपये की तय दर पर डॉलर की कमी है।

› तीसरा कदम: इस कमी को पूरा करने और दर को 65 रुपये पर स्थिर रखने के लिए, केंद्रीय बैंक (सरकार की तरफ से) को अपने विदेशी मुद्रा भंडार से डॉलर बाज़ार में 'बेचने' पड़ेंगे। इससे डॉलर की पूर्ति बढ़ेगी और दर 65 रुपये पर वापस आ जाएगी।

› चौथा कदम: जब सरकार निर्यात बढ़ाने के लिए रुपये का अवमूल्यन करती है और नई दर 1 डॉलर = 75 रुपये तय करती है, तो इसका मतलब है कि अब एक डॉलर खरीदने के लिए ज़्यादा रुपये देने पड़ेंगे।

› पांचवां कदम: रुपये के अवमूल्यन से विदेशी खरीदारों के लिए भारत का सामान सस्ता हो जाएगा (क्योंकि उन्हें पहले 1 डॉलर के बदले 65 रुपये का सामान मिलता था, अब 75 रुपये का मिलेगा), जिससे भारत का निर्यात बढ़ेगा।

उत्तर – स्थिर दर बनाए रखने के लिए, सरकार को बाज़ार में डॉलर बेचने होंगे। अवमूल्यन (1 डॉलर = 75 रुपये) से निर्यात बढ़ेंगे क्योंकि भारतीय वस्तुएं विदेशियों के लिए सस्ती हो जाएंगी।

उदाहरण 11. मान लीजिए एक देश 'अ' स्थिर विनिमय दर प्रणाली अपनाता है और एक देश 'ब' तिरती विनिमय दर प्रणाली। दोनों देशों की मौद्रिक नीति पर क्या अंतर पड़ेगा?

› देश 'अ' में, केंद्रीय बैंक को विनिमय दर को स्थिर बनाए रखने के लिए लगातार विदेशी मुद्रा बाज़ार में हस्तक्षेप करना पड़ता है। इससे उसकी मौद्रिक नीति, जैसे ब्याज दरों को नियंत्रित करना, विनिमय दर को बनाए रखने के उद्देश्य से प्रभावित होगी। उदाहरण के लिए, यदि रुपये पर अवमूल्यन का दबाव है, तो केंद्रीय बैंक को ब्याज दरें बढ़ानी पड़ सकती हैं ताकि विदेशी निवेश आकर्षित हो और विनिमय दर स्थिर रहे, भले ही देश के अंदर कम ब्याज दरों की आवश्यकता हो।

› देश 'ब' में, विनिमय दर बाज़ार की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है, इसलिए केंद्रीय बैंक को इसे बनाए रखने की चिंता नहीं होती। केंद्रीय बैंक अपनी मौद्रिक नीति, जैसे ब्याज दरें, पूरी तरह से घरेलू आर्थिक लक्ष्यों (जैसे मुद्रास्फीति नियंत्रण या आर्थिक वृद्धि) को प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र रूप से तय कर सकता है, क्योंकि उसे विनिमय दर की स्थिरता की चिंता नहीं करनी पड़ती।

› निष्कर्ष: स्थिर विनिमय दर प्रणाली अपनाने वाला देश 'अ' मौद्रिक नीति की स्वतंत्रता खो देता है, जबकि तिरती विनिमय दर प्रणाली अपनाने वाला देश 'ब' मौद्रिक नीति में अधिक स्वतंत्र रहता है।

उत्तर – स्थिर विनिमय दर वाले देश 'अ' की मौद्रिक नीति विनिमय दर को बनाए रखने के दबाव में काम करती है, जिससे उसकी स्वतंत्रता कम हो जाती है। तिरती विनिमय दर वाले देश 'ब' की मौद्रिक नीति विनिमय दर के हस्तक्षेप से मुक्त रहती है और वह घरेलू लक्ष्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकता है, जिससे उसे अधिक स्वतंत्रता मिलती है।

उदाहरण 12. मान लीजिए कि भारतीय रिज़र्व बैंक को लगता है कि एक अमेरिकी डॉलर की कीमत ₹85 हो गई है, जबकि वे चाहते हैं कि यह ₹82-₹83 के बीच रहे। RBI इस स्थिति को कैसे 'मैनेज' करेगा?

› पहला कदम: RBI देखेगा कि अमेरिकी डॉलर की कीमत ₹85 क्यों हो गई है। इसका मतलब है कि डॉलर की मांग बढ़ गई है या रुपये की सप्लाई बढ़ गई है, जिससे रुपये का मूल्य घट गया है।

› दूसरा कदम: अगर डॉलर बहुत महंगा हो गया है (₹85), तो RBI डॉलर की सप्लाई बढ़ाने के लिए बाज़ार में अपने पास से 'अमेरिकी डॉलर बेचेगा'।

› तीसरा कदम: जब RBI डॉलर बेचेगा, तो बाज़ार में डॉलर की 'सप्लाई बढ़ जाएगी' और इसके कारण डॉलर की कीमत नीचे आने लगेगी।

› चौथा कदम: RBI तब तक डॉलर बेचेगा जब तक कि डॉलर की कीमत उसके वांछित स्तर (जैसे ₹82-₹83) के करीब न आ जाए, या जब तक उसे लगे कि स्थिति अब नियंत्रण में है।

उत्तर – RBI बाज़ार में अमेरिकी डॉलर बेचकर डॉलर की कीमत को ₹85 से कम करके अपने वांछित स्तर (₹82-₹83) पर लाने का प्रयास करेगा।

उदाहरण 13. मान लीजिए एक खुली अर्थव्यवस्था में उपभोग (C) = 100 + 0.75Yd, निवेश (I) = 50, सरकारी खर्च (G) = 60, निर्यात (X) = 40 और आयात (M) = 20 + 0.1Y है। संतुलित राष्ट्रीय आय (Equilibrium National Income) ज्ञात कीजिए।

› हमें 'संतुलित राष्ट्रीय आय' (Equilibrium National Income) का सूत्र पता है: Y = C + I + G + X - M।

› अब हम सभी मूल्यों को इस सूत्र में रखते हैं: Y = (100 + 0.75Y) + 50 + 60 + 40 - (20 + 0.1Y)।

› पहले सारे स्थिरांक (constants) को एक साथ जोड़ते हैं और चर (variables) को अलग रखते हैं: Y = 100 + 50 + 60 + 40 - 20 + 0.75Y - 0.1Y।

› स्थिरांक को जोड़ने पर: Y = 230 + 0.75Y - 0.1Y।

› अब Y वाले पदों को बाईं ओर ले जाते हैं: Y - 0.75Y + 0.1Y = 230।

› Y को कॉमन लेने पर: Y(1 - 0.75 + 0.1) = 230।

› गुणांक को हल करने पर: Y(0.35) = 230।

› अतः Y = 230 / 0.35।

› भाग देने पर हमें मिलता है: Y 657.14।

उत्तर – संतुलित राष्ट्रीय आय (Equilibrium National Income) लगभग 657.14 है।

उदाहरण 14. मान लीजिए एक खुली अर्थव्यवस्था में सीमांत उपभोग प्रवृत्ति (MPC) 0.75 है और सीमांत आयात प्रवृत्ति (MPM) 0.20 है। इस अर्थव्यवस्था के लिए खुली अर्थव्यवस्था गुणक की गणना कीजिए।

› हमें MPC (c) = 0.75 और MPM (m) = 0.20 दिया गया है।

› खुली अर्थव्यवस्था गुणक का सूत्र है: K_open = 1 / (1 - c + m)

› सूत्र में मान रखने पर: K_open = 1 / (1 - 0.75 + 0.20)

› पहले हर (denominator) को हल करें: 1 - 0.75 = 0.25

› फिर 0.25 + 0.20 = 0.45

› अब K_open = 1 / 0.45

› गणना करने पर: K_open 2.22

उत्तर – खुली अर्थव्यवस्था गुणक लगभग 2.22 है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह 'खुली अर्थव्यवस्था - समष्टि अर्थशास्त्र' के पूरे अध्याय का आधार है। इससे सीधे परिभाषा या प्रकार पूछे जा सकते हैं।

• अदायगी-संतुलन के चालू खाते और पूंजी खाते के बीच अंतर और उनमें शामिल होने वाले मदों को अच्छे से समझ लें। यह बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है।

• चालू खाते के घटकों को उदाहरणों के साथ याद रखें और चालू खाते के अधिशेष और घाटे के बीच अंतर स्पष्ट रूप से समझें, यह बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है.

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा में अक्सर छोटी परिभाषाओं और सीधे-सादे सवालों के रूप में आता है। विनिमय दर की परिभाषा और इसके महत्व पर ध्यान दें।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर विनिमय दर के निर्धारण और उसके मांग व पूर्ति के कारकों पर सीधे सवाल के रूप में आता है, तो इसके कारणों को अच्छे से समझ कर लिखना।

• तिरती विनिमय दर प्रणाली में 'माँग और पूर्ति के बदलाव' से रुपये के मूल्यह्रास (depreciation) और मूल्यवृद्धि (appreciation) को कारण सहति समझाना बहुत ज़रूरी है। अक्सर 3-4 नंबर में ऐसे सवाल आते हैं, इसलिए ग्राफ और उदाहरण के साथ तैयार रहना।

• क्रय-शक्ति समता सिद्धांत और ब्याज दर विभेदक से जुड़े प्रश्न अक्सर सीधे बोर्ड परीक्षाओं में पूछे जाते हैं। इन पर विशेष ध्यान देना।

• स्थिर विनिमय दरें, अवमूल्यन और पुर्नमूल्यन की परिभाषाएँ और उनके आर्थिक प्रभाव बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर पूछे जाते हैं। इन्हें उदाहरणों के साथ अच्छे से तैयार करें।

• स्थिर और तिरती विनिमय दर प्रणालियों के गुणों और दोषों पर आधारित प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं। इनके बीच के मुख्य अंतरों को अच्छे से समझकर जाना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है! अक्सर 'प्रबंधित तिरती विनिमय दर प्रणाली' की परिभाषा और केंद्रीय बैंक की भूमिका पर सीधा प्रश्न पूछा जाता है। इसे 'गंदी तिरती' (Dirty Floating) क्यों कहते हैं, यह भी समझ कर जाना।

• खुली अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय के निर्धारण पर आधारित गणना वाले प्रश्न (numerical questions) बोर्ड परीक्षा में अक्सर 4 या 6 अंकों के लिए आते हैं। सूत्र को सही तरीके से लगाना और 'सीमांत आयात प्रवृत्ति' (Marginal Propensity to Import) को गुणांक में शामलि करना न भूलें।

• यह सूत्र और 'बंद अर्थव्यवस्था गुणक से छोटा क्यों होता है' इसका कारण बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। उदाहरण के साथ इसकी व्याख्या करना सीखो!

एक नज़र में रिवीज़न

› खुली अर्थव्यवस्था: वस्तुओं, सेवाओं, वित्तीय परिसंपत्तियों का अंतरराष्ट्रीय लेनदेन।

› BoP = देश के नविासी + शेष वशि्व के बीच लेन-देन का ववरिण (चालू + पूंजी खाते)।

› चालू खाता = वस्तुओं + सेवाओं + अंतरण भुगतान; अधिशेष (प्राप्तियाँ > भुगतान), घाटा (प्राप्तियाँ < भुगतान).

› विदेशी विनिमय बाजार: मुद्रा विनिमय स्थल; विनिमय दर: एक मुद्रा का दूसरी में दाम।

› मांग: आयात, विदेश निवेश; पूर्ति: निर्यात, विदेशी निवेश।

› तिरती विनिमय दर: बाज़ार की माँग-पूर्ति से निर्धारित; मूल्यह्रास/मूल्यवृद्धि।

› ब्याज दर अंतर, आय वृद्धि, क्रय-शक्ति समता (PPP) विनिमय दर को प्रभावित करते हैं।

› स्थिर विनिमय दरें सरकार द्वारा निर्धारित; अवमूल्यन (मूल्य घटाना); पुर्नमूल्यन (मूल्य बढ़ाना)।

› स्थिर दर: विश्वसनीयता, भंडार आवश्यक। तिरती दर: BOP समायोजन, मौद्रिक स्वतंत्रता, अस्थिरता।

› प्रबंधित तिरती: बाजार+केंद्रीय बैंक हस्तक्षेप; लचीलापन+स्थिरता.

› खुली अर्थव्यवस्था में $Y = C + I + G + (X - M)$ और गुणक = $1 / (1 - c + m)$।

› खुली अर्थव्यवस्था गुणक = $1 / (1 - MPC + MPM)$; आयात से गुणक घटता है।